पाँच गौरैया

एक जापानी लोक कथा

रूपान्तरण: पैट्रिशिया मोंटगोमरी न्यूटन

भाषान्तर: पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

एक दयालु जापानी वृद्धा एक घायल गौरैया को बचाती है। उसकी देखभाल कर उसे ठीक करते समय अपना फायदे-नुकसान की फ़िक्र नहीं करती। गौरैया के लिए उसके नेह-प्रेम का उसका परिवार और पड़ौसी तक मखौल उड़ाते हैं। पर वह ध्यान नहीं देती। वह चिड़िया की तीमारदारी करती चलती है।

दूसरों के लिए रहम का ईनाम जरूर मिलता है। गौरैया पूरी तरह ठीक हो अपने संगी-साथियों के पास चली जाती है। पर वह लौट कर बुढ़िया को एक तुम्बी का बीज देती है। बीज सावधानी से बोया जाता है, उससे उगे पौधे की वृद्धा साज-संभाल करती है। उससे जादूई तुम्बियाँ उगती हैं जो वृद्धा और उसके परिवार को धनी बना डालती हैं

जो पड़ौसी उसका पहले मज़ाक उड़ाया करते थे, अब उससे जलने लगते हैं। कथा कहती है कि ईनाम आपके कर्मों के लिए नहीं, बल्की उन कर्मों के पीछे आपकी मंशा के लिए मिला करते हैं। रहमदिल होना दयालुता की निशानी है, और लालच तो आख़िर लालच ही है। और इन दोनों का अपना-अपना ईनाम होता है।

पाँच गौरैया

एक जापानी लोक कथा

रूपान्तरण: पैट्रिशिया मोंटगोमरी न्यूटन

भाषान्तर: पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

बहुत समय पहले, सुदूर पूरब में बसे एक गाँव में एक वृद्धा अपने घर के बाहर बैठी रात के खाने के लिए चावल फटक रही थी। बसन्त की वह बेहद खुशनुमा सुबह थी। अपना काम करते-करते बुढ़िया पास खेलते बच्चों को भी सुन रही थी।

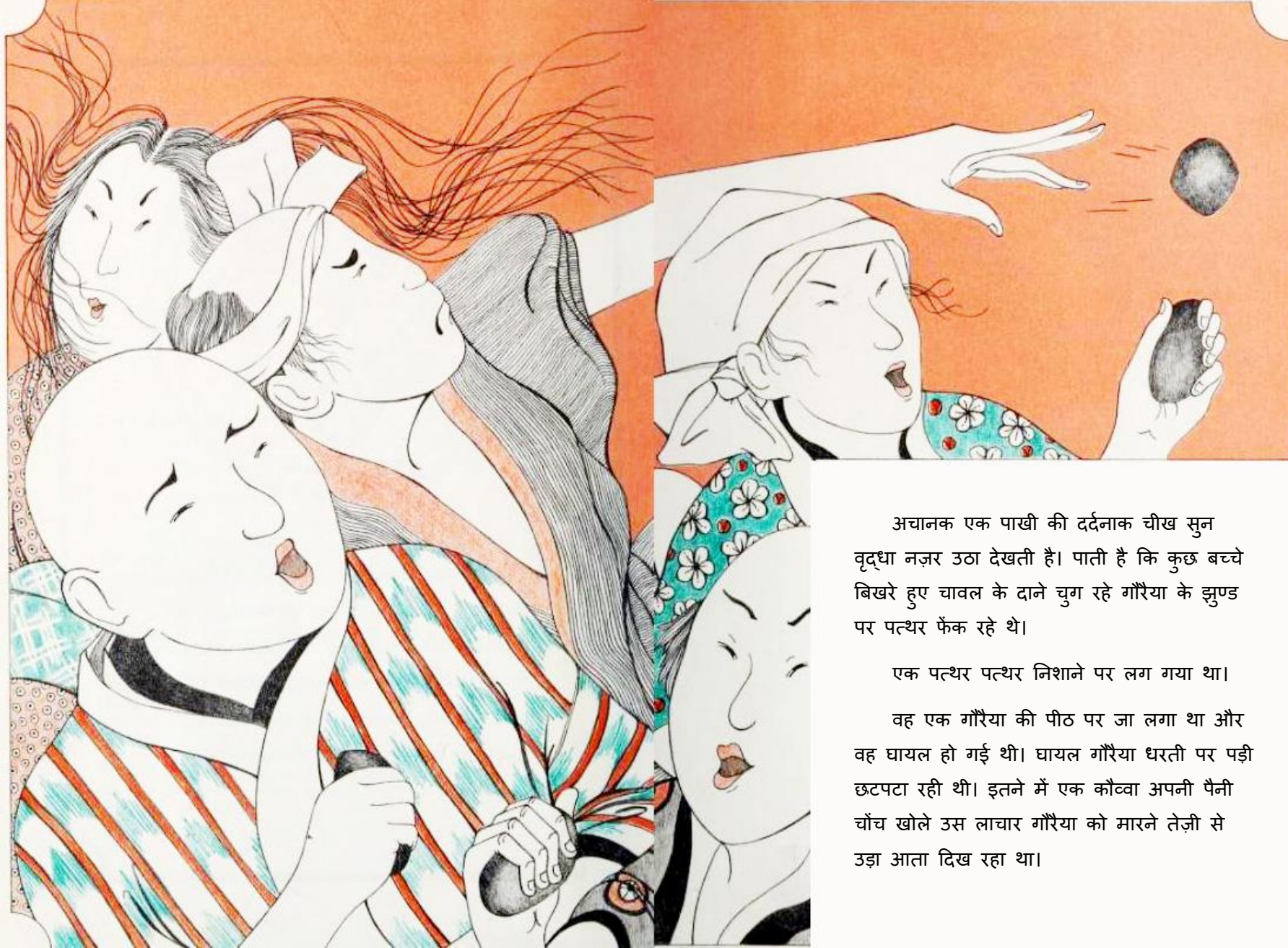

अचानक एक पाखी की दर्दनाक चीख सुन वृद्धा नज़र उठा देखती है। पाती है कि कुछ बच्चे बिखरे हुए चावल के दाने चुग रहे गौरैया के झुण्ड पर पत्थर फेंक रहे थे।

एक पत्थर पत्थर निशाने पर लग गया था।

वह एक गौरैया की पीठ पर जा लगा था और वह घायल हो गई थी। घायल गौरैया धरती पर पड़ी छटपटा रही थी। इतने में एक कौव्वा अपनी पैनी चोंच खोले उस लाचार गौरैया को मारने तेज़ी से उड़ा आता दिख रहा था।

वृद्धा घबरा कर दौड़ी। तालियाँ बजा, चीख-पुकार मचा उसने कौव्वे को भगाया। तब बड़ी ही सावधानी से उस सहमी और घायल गौरैया को उठाया। धीमे-धीमे उसे सहला कर शान्त किया।

वृद्धा ने एक छोटी टोकरी ढूंढ़ी। टोकरी में कपड़े की कतरनें लगा उसने एक मुलायम घोंसला बनाया। गौरैया को उसमें रख टोकरी ढ़की और चिड़िया को आराम करने दिया।

दोपहर को वृद्धा टोकरी घर के अन्दर ले गई। तब उसने ताम्बे के चूर्ण से दवा बनाई। उसने बड़े ही प्यार से एक पतली टहनी की मदद से दवा गौरैया के मुँह में टपकाई।

उसका परिवार रात के खाने के लिए इकट्ठा था। घायल चिड़िया की तीमारदारी की कोशिश करते देख सब हंसने लगे।

"अम्मा, अपने समय के साथ करने को क्या बेहतर और कुछ नहीं है? तुम अपना समय इस बेवकूफ गौरैया पर क्यों बरबाद कर रही हो?" उसकी बहू ने ताना कसा। "चिड़िया तो इस कदर बीमार है कि वह तुम्हारी तीमारदारी की कोशिशों पर ग़ौर तक नहीं कर रही।"

वृद्धा ने अपनी बहू के बेलिहाज़ लफ्ज़ों और बाकी परिवार के मख़ौल को अनसुना कर दिया। वह पूरे जतन से चिड़िया की देखभाल में जुटी रही।

वह हर दिन उसे चुगने को चावल देती, पानी पिलाती और दवा देती। कुछ सप्ताह बाद वृद्धा ने अपने परिवार वालों से कहा कि वे भी कभी उसे चुग्गा और ताज़ा पानी दे दिया करें। पर वे साफ़ मुकर गए। "अरे इतनी हाय-तौबा क्यों करती हो। आख़िर वह एक गौरैया ही तो है," वे बोले।

"तुम जो चाहो सोचो, मुझे कोई परवाह नहीं," बुढ़िया ने जवाब दिया। "बेचारी कितनी लाचार जीव है। "इधर गौरैया की हालत दिन-ब-दिन सुधरती गई। कई महीनों बाद वह आख़िरकार उड़ने के काबिल हो गई।

गर्मियों की शुरुआत के एक धूपदार दिन वृद्धा को लगा कि गौरैया अब आज़ादी से उड़ने को तैयार है।

उसका मन भारी था। गौरैया के छोटे-से सिर को उसने आख़िरी बार सहलाया। तब उसे उठा दरवाज़ा सरकाया और हथेली खोल गौरैया को छोड दिया।

वृद्धा की हथेली से उड़ने के पहले गौरैया कुछ देर फड़फड़ायी। पर तब उसने अपने डैन पसारे, उड़ी और काफ़ी दूर एक पेड़ की सबसे ऊपरी शाखा पर जा बैठी।

अब वृद्धा हर दिन अपने घर के सामने बैठ, चावल के दाने चुगते हुए गौरैया के झुण्ड में अपनी गौरैया को ढूंढ़ा करती। उसकी देखभाल करते समय उसे इतना लगाव जो हो गया था। उसकी चहक सुनने को उसका मन आकुल रहता।

चावल के बचे-खुचे दाने धरती पर बिखेरते समय वह आहें भरती। उसकी उम्मीद यही रहती कि गौरैया के झुण्ड में उसकी अपनी गौरैया शायद नज़र आ जाए।

तब एक सुबह वृद्धा को अपनी खिड़की के सामने एक चहकती गौरैया नज़र आई। "क्या यह मेरी ही गौरैया है?" उसने मन ही मन सोचा।

वह उसे क़रीब से देखने खिड़की के पास गई। बेशक वही तो थी! गौरैया फुदक कर उसकी उंगली पर आ बैठी। वृद्धा ने बड़े प्यार से उसका सिर सहलाया। गौरैया ने तब उसकी हथेली पर एक तुम्बी का बीज टपकाया और उड़ गई।

''मेरी नन्ही गौरैया मुझे भूली नहीं,'' उसने बीज को देखते सोचा।

वृद्धा की बहू यह देख रही थी। वह हंस कर बोल पड़ी, ''अम्मा एक अदनी-सी चिड़िया के पीछे तुम्हारी आँखें क्यों डबडबा रही हैं? और इस इकलौते बीज का भला तुम करोगी क्या?''

''बोऊँगी, और क्या! और उससे निकले पौधे की साज-संभाल करते अपनी नन्ही सहेली को याद करूँगी,'' बुढ़िया ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया।

वृद्धा ने बीज बोया, वह हर दिन तुम्बी के पौधे को सींचती। जब भी खरपतवार दिखती उसे उखाड़ती, पौधों पर लगे कीड़ों को चुन कर फेंकती।

तब पतझड़ का मौसम आया। वह इकलौती तुम्बी की लता कई बड़ी-बड़ी तुम्बियाँ के बोझ से दबी हुई थी। वृद्धा ने उन्हें अपने परिवार को खिलाया, अपने पड़ौसियों को बाँटा। अजीब यह था कि वह चाहे जितनी तुम्बियाँ उतारती, लता पर हमेशा उसकी ज़रूरत से ज़्यादा तुम्बियाँ नज़र आतीं।

वृद्धा खुश थी और उसका परिवार मज़े से तुम्बियाँ खा रहा था। अब वे उस पर हंस नहीं रहे थे, उसका मखौल नहीं उड़ा रहे थे।

जब पूरे गाँव के हरेक परिवार को तुम्बी बाँटी जा चुकी, बुढ़िया ने तय किया कि वह आख़िरी आठ तुम्बियाँ सुखाएगी, ताकि उनका इस्तमाल सामान रखने के लिए किया जा सके। वह उन्हें घर के अन्दर ले आई और सूखने को लटका दिया।

कुछ महीनों बाद वृद्धा अपनी खिड़की के पास बैठ कुछ गौरैया को देख रही थी कि उसे तुम्बियों की याद आई।

जब वह तुम्बियों को देखने गई, वे अच्छे से सूख चुकी थीं। उन्हें उतारते वक़्त उसे उनके वज़न पर अचरज हुआ। उसने सोचा, "बुढ़ापे में मैं काफ़ी कमज़ोर हो गई हूँ।"

उसने बड़ी सावधानी से पहली तुम्बी का ऊपरी हिस्सा काटा। अन्दर वह सफेद चावल देख दंग रह गई।

बहू ने वृद्धा की हैरत भरी चीख सुनी तो वह भागी हुई आई। पूछा "क्या हुआ अम्मा?"

वृद्धा जोश से भर बहू को बताया कि तुम्बी में चावल भरा था।

"नामुमकिन!" बहू ने नाक चढ़ा कहा। "तुम सठिया गई हो अम्मा। तुमने ही सूखी तुम्बी में चावल रख दिए होंगे और तब भूल गई होगी।"

बहू ने चाकू उठाया और दूसरी तुम्बी को काटा। उसमें से भी चावल निकले!

इस चमत्कार से चकरा कर बहू ने बाकी बची छहों तुम्बियों को भी काट डाला। हरेक तुम्बी सफ़ेद चावलों से लबालब भरी थी।

"मेरी नन्ही सहेली ही इस करिश्मे की ज़िम्मेदार है!" वृद्धा खुशी से बोली।

"अम्मा चलो चावलों को एक बड़ी टोकरी में डाल कोठार में रख देते हैं," बहू ने सुझाया।

वृद्धा ने बहू को एक बड़ी टोकरी में चावल उलटते देखा। तब कोठार के कोने में टोकरी को खिसका कर रखने में उसकी मदद की।

इसके बाद दोनों तुम्बियों को जाँचने गईं। दोनों ही यह देख हैरत में पड़ गईं कि तुम्बियाँ फिर से चावलों से भर चुकी थीं!

पूरी दोपहर दोनों तुम्बियों को बड़ी टोकरियों में उलीचती रहीं। पर चावल थे कि खत्म ही नहीं हो रहे थे।

वे इधर तुम्बियों को उलट कर खाली करतीं, उधर उसमें और-और चावल भरे मिलते।

कभी खत्म न होने वाले चावलों के कारण वृद्धा जल्द ही बड़ी धनी हो गई।

वृद्धा के पडौस में एक और बुढ़िया और उसका परिवार रहता था। ताज़ा-ताज़ा अमीर बने अपने पडौसियों से यह परिवार जलने लगा। वे पहली वृद्धा और उसके परिवार को नए कपड़े पहने देख कुढ़ने लगे। पहली बुढ़िया की बहू की डीगें सुनना उन्हें कतई नहीं सुहाता।

''सुनो,'' उन्होंने अपनी माँ से कहा। ''पूरा गाँव जानता है कि यह परिवार इसलिए इतना अमीर बन गया क्योंकि उनकी माँ ने एक घायल गौरैया की तीमारदारी कर उसे ठीक किया था।''

"तुम भी उस बुढ़िया जितनी अकलमन्द तो हो ही," वे आगे बोले, "कि एक घायल गौरैया को ढूंढ़ कर उसकी तीमारदारी कर उसे ठीक कर दो। चिड़िया तुम्हारी शुक्रगुज़ार होगी और तुम्हें भी जादूई तुम्बी का बीज देगी।"

अपने परिवार की इज़्ज़त-मुहब्बत, और ज़ाहिर है दौलत भी, पाने के मंशा से दूसरी वृद्धा एक अदद घायल गौरैया तलाशने लगी। वह अपने दिन का ज़्यादातर समय घर के बाहर बैठ गौरैया को देखने में बिताने लगी। पर उसे एक भी घायल चिड़िया नहीं मिली।

यों कई सप्ताह बीत गए। बुढ़िया नाराज़ और बेकरार हो गई।

"मैं तो क्या मेरी बहू भी बूढ़ी हो जाए तब तक भी मैं यों बैठी रहूँ, तो भी शायद घायल गौरैया न मिले," वह बुड़बुड़ाते हुए ज़मीन पर बिखरे पत्थर-ढ़ेलों को लतियाने लगी।

''आहा!'' जीत के भाव से भर उसने कहा।

''इस ढ़ेले से एक बात सूझी है।''

वह नीचे झुकी, उसने एक ढ़ेला उठाया। पास बैठ दाना चुग रहे गौरैया के झुण्ड की ओर सावधानी से निशाना साध ढ़ेला फेंक मारा।

''आहाहा!'' वह तालियाँ बजाती चीख उठी। उसके फेंके ढ़ेले से एक गौरैया का डैन टूट गया था।

''कितना आसान था,'' उसने छटपटाती चिड़िया को उठाते हुए कहा।

''वह दूसरी बुढ़िया एक ही गौरैया को ठीक कर धनवान बन गई। अगर मेरे पास तीमारदारी करने को तीन-चार गौरैया हो, तो मैं और भी अमीर बन जाऊँगी,'' उसने सोचा।

घायल गौरैया को एक टोकरी में रख उसने कुछ दाने चावल के बिखेरे, ताकि और गौरैया आएं। तब उसने कई छोटे-बड़े पत्थर इकट्ठे किए और इन्तज़ार करने लगी। जब काफ़ी सारी गौरैया चुगने आ गईं, वह उन पर पत्थर फेंकने लगी।

कुछ नाकाम कोशिशों के बाद वह तीन और गौरैया को घायल कर सकी।

उसने इन तीनों को भी पहली गौरैया के साथ टोकरी में धरा और उन्हें घर ले गई। वह उन्हें हर दिन दवा देती, चुगने को चावल और पीने को पानी भी देती। कई महीनों बाद वे ठीक हुईं।

वृद्धा ने उन्हें आज़ाद किया और बड़ी खुशी से उन्हें उड़ते देखा। ''वे जल्द ही मेरे बीज लेकर लौटेंगी,'' उसने सोचा।

''मैं अपने पडौसियों से कहीं ज़्यादा अमीर बन जाऊँगी। मेरा परिवार मेरी खूब इज़्ज़त करेगा।''

कई सप्ताह बाद चारों गौरैया सच में लौटीं। हरेक ने एक-एक तुम्बी का बीज टपकाया और उड़ गईं। बुढ़िया ने मुस्कुराते हुए बीज उठा लिए और चारों बीज बो दिए।

बीज से निकले पौधों से जल्द ही मिलने वाले ढेर से चावलों की वह तैयारी करने लगी।

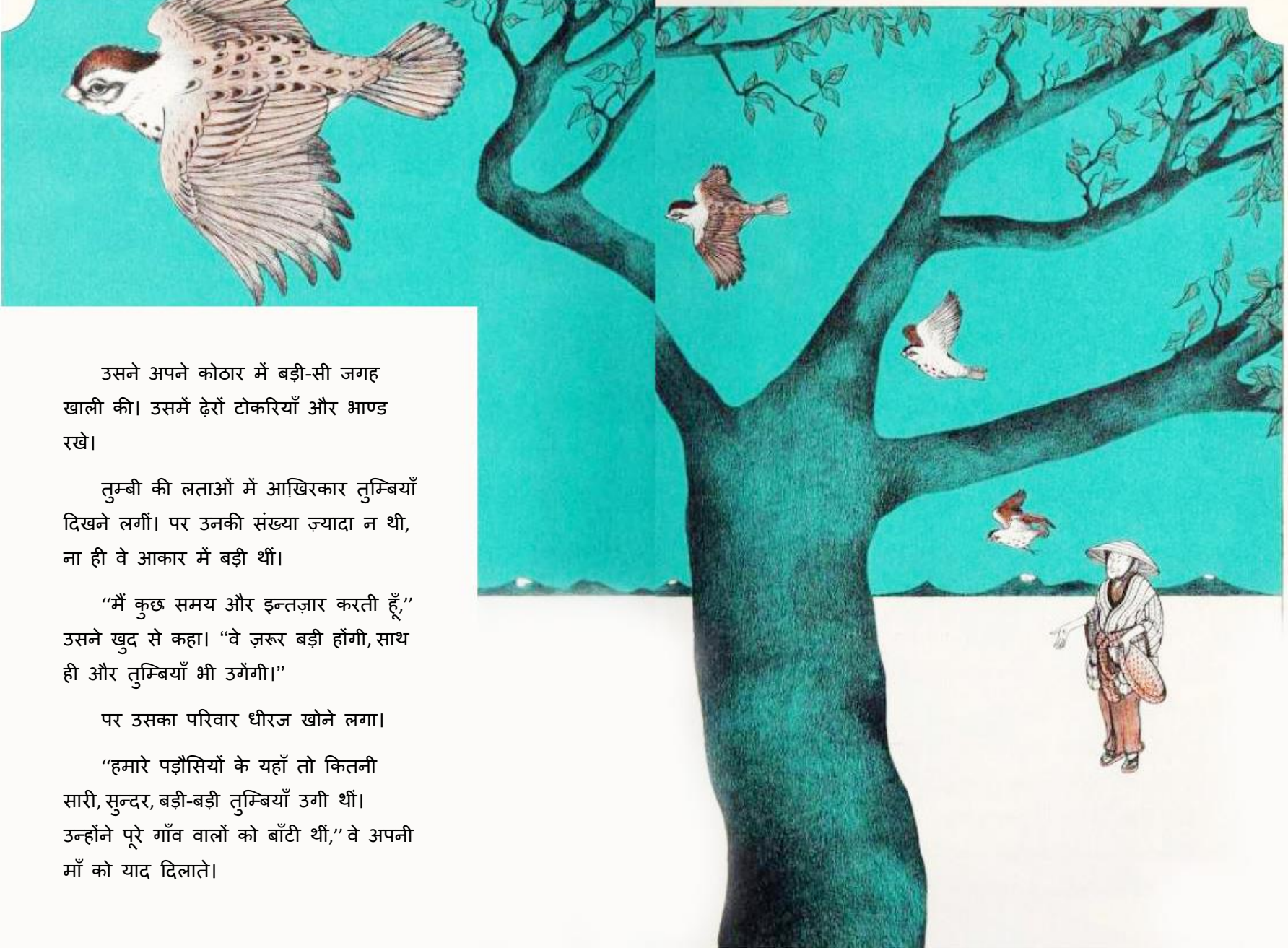

उसने अपने कोठार में बड़ी-सी जगह खाली की। उसमें ढ़ेरों टोकरियाँ और भाण्ड रखे।

तुम्बी की लताओं में आख़िरकार तुम्बियाँ दिखने लगीं। पर उनकी संख्या ज़्यादा न थी, ना ही वे आकार में बड़ी थीं।

"मैं कुछ समय और इन्तज़ार करती हूँ," उसने खुद से कहा। "वे ज़रूर बड़ी होंगी, साथ ही और तुम्बियाँ भी उगेंगी।"

पर उसका परिवार धीरज खोने लगा।

"हमारे पड़ौसियों के यहाँ तो कितनी सारी, सुन्दर, बड़ी-बड़ी तुम्बियाँ उगी थीं। उन्होंने पूरे गाँव वालों को बाँटी थीं," वे अपनी माँ को याद दिलाते।

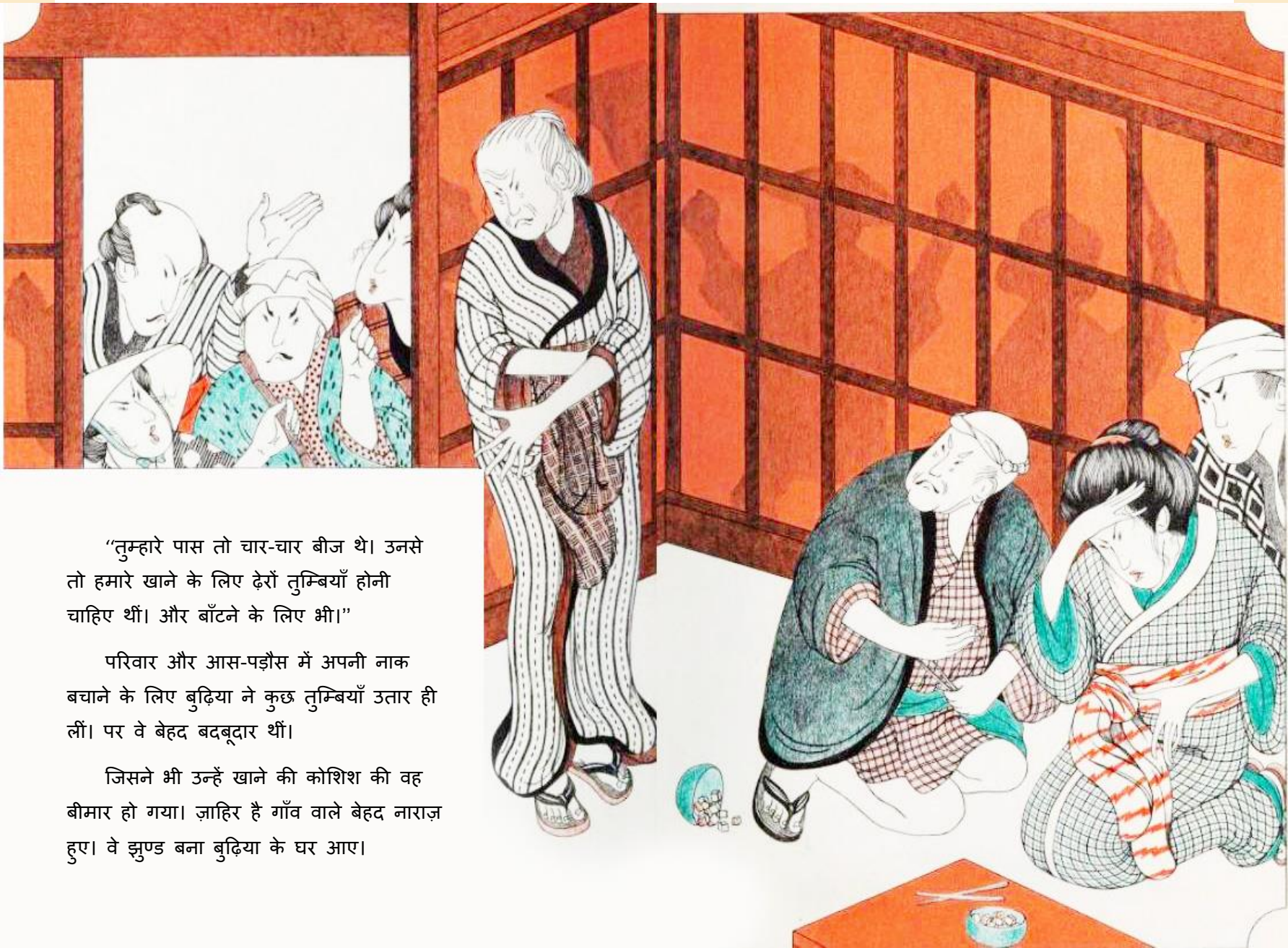

“तुम्हारे पास तो चार-चार बीज थे। उनसे तो हमारे खाने के लिए ढ़ेरों तुम्बियाँ होनी चाहिए थीं। और बाँटने के लिए भी।”

परिवार और आस-पड़ौस में अपनी नाक बचाने के लिए बुढ़िया ने कुछ तुम्बियाँ उतार ही लीं। पर वे बेहद बदबूदार थीं।

जिसने भी उन्हें खाने की कोशिश की वह बीमार हो गया। ज़ाहिर है गाँव वाले बेहद नाराज़ हुए। वे झुण्ड बना बुढ़िया के घर आए।

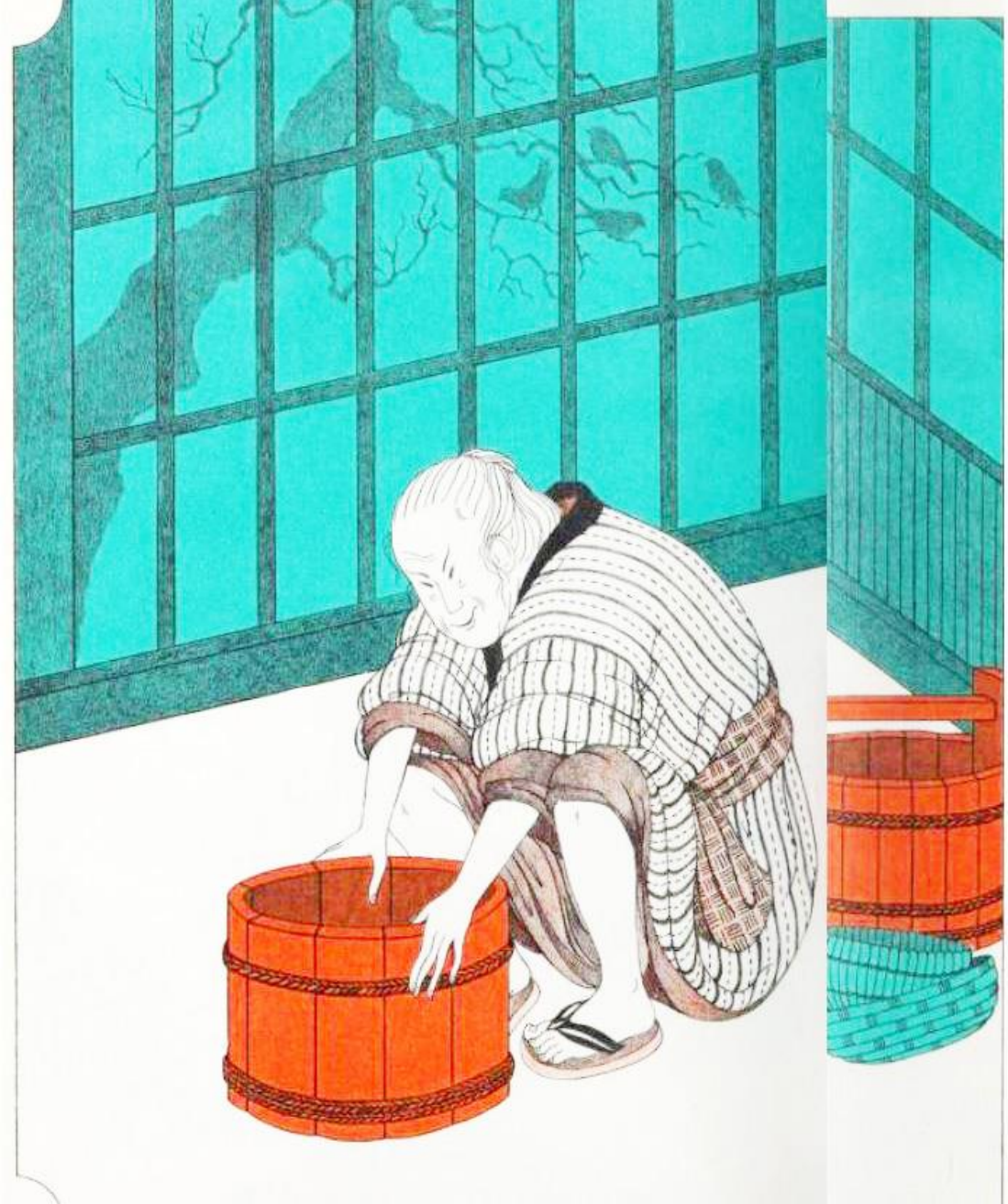

वे अपनी मुट्ठियाँ तान गालियाँ दे रहे थे। पर वृद्धा और उसके परिवार के लोग ज़हरीली तुम्बी खा इस कदर बीमार थे कि लोगों की नाराज़गी पर उन्होंने कोई ध्यान ही नहीं दिया।

कुछ दिनों में वृद्धा और उसके परिवार वालों की हालत संभली। उसने खुद से कहा, "मैंने शायद तुम्बियाँ उतारने में जल्दबाज़ी कर दी। इसलिए हम सब बीमार पड़ गए।"

लता पर अब कुछ ही तुम्बियाँ लटकी थीं। सो वृद्धा ने बची-खुची तुम्बियों को उतारा और उन्हें सूखने लटका दिया। उसे भरोसा था कि कुछ ही दिनों में उसे ढ़ेर सारा चावल मिलेगा।

खचाक! एक दिन उसने पहली सूखी तुम्बी का ऊपरी हिस्सा चाकू से काटा। उसमें से चावल निकालने के लिए उसने तुम्बी को पलटा ही था वह डर से चीख पड़ी।

तुम्बी में से हज़ारों-हज़ार मक्खियाँ निकलीं। वे बुढ़िया के गिर्द भिनभिनाने लगीं। वृद्धा की चीख-पुकार सुन जो भी दौड़ा आता, मक्खियाँ उस पर भी टूट पड़तीं।

टोकरियों, झाड़नों से फटकारते परिवार वालों को आख़िर तंग आ कर घर से निकल भागना पड़ा। हैरत से भरे पड़ौसी वृद्धा और उसके परिवार को मक्खियों से घिरे सड़क पर भागते देखते रहे। सब यह देख अचरज कर रहे थे, और कई तो सिर हिलाते-हिलाते ठठा कर हंस भी रहे थे।

मक्खियों ने परिवार वालों का पीछा सड़क के ऊपर-नीचे, आगे-पीछे किया और आख़िरकार उन्हें गाँव के ही बाहर खदेड़ दिया।

दूसरी वृद्धा और उसके परिवार वालों ने काफ़ी दिनों बाद ही घर लौटने की हिम्मत की।

घर से बची-खुची मक्खियों को भगाने में उन्हें सप्ताह भर और लगा।

इधर पड़ौस की वह पहली वृद्धा गौरैया के लिए चावल फटक रही थी। पाँच गौरैया उसके सामने धीमे से उतरीं।

वृद्धा उनकी और ताक रही थी कि उसे लगा कि वे उसे आँख मार रही हैं।